

## किशोर छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा का अध्ययन

डॉ. गीता मीणा\*

### सार

किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है। किशोरावस्था में मानव के विभिन्न विकास होने होते हैं जिसके कारण किशोरावस्था जीवनकाल का एक अहम हिस्सा भी है। इस अवस्था में व्यक्तिगत के विभिन्न पक्षों में यथा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक सामाजिक विकास में परिवर्तन होते हैं क्या यह परिवर्तन किशोरावस्था में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना को जन्म देता है? क्या समाज व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। तब सुरक्षा असुरक्षा की भावना क्षतिग्रस्त होती है? इस शोध के माध्यम से यही जानने की कोशिश होगी कि किशोर छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना उनके आगे बढ़ने में किस तरह से प्रभावित करती है।

**शब्दकोश:** किशोरावस्था, सुरक्षा, असुरक्षा, परिवर्तन मूलभूत आवश्यकताएँ।

### प्रस्तावना

मानव विकास चक्र की तीसरी अवस्था किशोरावस्था है। सामान्यतः 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु को किशोरावस्था मानते हैं, परन्तु कुछ मनोवैज्ञानिक 21 वर्ष तक की आयु को किशोरावस्था मानते हैं।

किशोरावस्था को जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है किशोरावस्था विकास की एक चतुरदूरदर्शी अवस्था है। इस अवस्था में बालक को ना तो बालक कह सकते हैं ना ही व्यस्क व्यक्ति कह सकते हैं। इस अवस्था में बालक के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन परिपक्वता की दिशा में होते हैं और किशोरावस्था में ही किशोर बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों यथा शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक विकास में ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं जिसके कारण हम किशोरावस्था को एक नए जन्म की संज्ञा देते हैं।

किशोरावस्था का महत्व व्यक्ति के विकास में अलग है। इस अवस्था के आरम्भ होते ही बालक में अनेक परिवर्तन होने लगते हैं और समझा जाने लगता है कि बालक प्रौढ़ता अथवा परिपक्वता प्राप्त करने लगता है।

किशोरावस्था शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "एडोलिसयर" शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है। परिपक्वता की ओर बढ़ना।

**जर्सील्ड (1978)** के अनुसार, "किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें एक विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था में परिपक्वावस्था की ओर बढ़ता है।"

\* सहायक आचार्य (गृह विज्ञान), राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक, राजस्थान।

**कारमाइकेल (1968)** ने किशोरावस्था की परिभाषा तीन दृष्टिकोणों से दी है, आपके अनुसार, “किशोरावस्था जीवन का वह समय है, जहाँ से एक अपरिपक्व व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास एक चरम सीमा की ओर अग्रसर होता है। दैहिक दृष्टि से एक व्यक्ति तब किशोर बनता है जब उसमें वयःसन्धि अवस्था प्रारम्भ होती है और उसमें सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता प्रारम्भ हो जाती है। वास्तविक आयु की दृष्टि से बालिकाओं में वयःसन्धि अवस्था बारह वर्ष की आयु से पन्द्रह वर्ष की आयु के मध्य प्रारम्भ होती है। इस आयु अवधि में 2 वर्ष की आयु किसी ओर घट-बढ़ सकती है। बालकों के लिए वयःसन्धि का प्रारम्भ इसी आयु में प्रारम्भ होता है, बहुधा यह बालिकाओं की अपेक्षा 1 या 2 वर्ष देर से प्रारम्भ होता है।

**स्टेनले हाल के अनुसार** – “बड़े बल एवं तनाव तूफान एवं विरोध की अवस्था माना है।” किन्हीं कारणों से किशोर बालक बालिका अगर चिंतित, परेशान रहने लगते हैं तो वह स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। जिससे किशोरों में सुरक्षा एवम् असुरक्षा की भावना का विकास होने लगता है। जिससे व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

जब किशोरावस्था में पर्दापण करते समय किशोर को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक, किसी भी प्रकार के तनाव व कठिनाईयों का सामना करना पड़े याउसे इस बात का अनुभव हो कि उसे परिवार के सदस्य या अन्य व्यक्ति उसे महत्वता कम दे रहे हैं या उनका उतना सम्मान नहीं कर रहे हैं जितना की दूसरों का तो इससे उसमें तिरस्कृत हीनता की भावना आ जाती है। वे समझने लगते हैं कि हमें तो कोई प्यार नहीं करना है तथा हमारी किसी को भी आवश्यकता नहीं है। जिससे वे किशोर बालक चिंतित, परेशान रहने लगते हैं एवं स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी समस्याओं से घिरा रहता है परन्तु सभी की क्रिया इनके प्रति अलग-अलग होती है। कोई एक समस्या जो एक व्यक्ति के जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती है। वही समस्या दूसरे व्यक्ति के जीवन को प्रभावित नहीं करती है। इसी से व्यक्ति में सुरक्षा व असुरक्षा की भावना का विकास होता है और इसी भावना से व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है। सुरक्षा व असुरक्षा की भावना व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

जब असुरक्षा एक सामान्यीकृत भावना बन जाती है तो यह जीवन के प्रत्येक आयाम/पहलू को प्रभावित करती है। असुरक्षित बालकों में बहुधा क्रोध, आक्रामकता, अपरिपक्वता व शीघ्र घबराहट की आदत देखी जाती है। असुरक्षित किशोर अनेक परेशानियों, कुंठाओं, दुश्चिन्ताओं, भय व शंकाओं से ग्रसित रहता है और इन सबसे उभरने के प्रयास स्वरूप उसमें ऐसी आदतों का विकास हो जाता है जो स्वयं एक समस्या का रूप ले लेती है।

संक्षेप में सुरक्षा को इस प्रकार से समझ सकते हैं। “सुरक्षात्मक परिस्थिति और किसी भी तरह के डर से मुक्त जीवन और सुरक्षात्मक मित्रता शांति, सरलतापूर्वक विश्राम संवेगात्मक स्थिरता, आत्म स्वीकृति और अच्छी सुरक्षात्मकपूर्ण आत्म भावना किस तरह एक व्यक्ति अपने आपको दूसरे व्यक्तियों से सुरक्षित समझता है किस तरह सहयोग, दया सहानुभूति और सामाजिकता को महसूस करता है। इन सभी से उसमें सुरक्षात्मकता देखी जाती है। असुरक्षात्मकता को इस प्रकार से देख सकते हैं। संवेगात्मक, अस्थिरता, चिड़चिड़ापन, अकेलापन ईर्ष्या भयहीनता विरोधी, चिंता आज्ञा का उल्लंघन करता है एवम् दुष्कार्यों को अपनाता है। असुरक्षा महसूस करने वाला व्यक्ति हमेशा परेशान रहता है। अपने कार्य के प्रति संदेहास्पद रहता है। व्यक्ति में सुरक्षात्मक भावना व असुरक्षात्मक भावना को उसकी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर विश्लेषित कर सकते हैं। यदि इनकी आपूर्ति में वह असफल रहता है तो स्वयं को असुरक्षित और सफलतापूर्वक संतुष्टि पर सुरक्षित महसूस करता है।

### साहित्य पुनरावलोकन

**प्रेटोन एवं गार्डनर (1963)** – एक विशिष्ट मनो-स्थिति है जिसका महत्वपूर्ण कारक “सांवेगिक पृथक्करण भी है। कुछ बच्चे संतुलित भोजन ले रहे हैं फिर भी सामान्य वृद्धि नहीं कर पाते क्योंकि वे सांवेगिक शोषण एवं उपेक्षा के शिकार होते हैं (दूसरे शब्दों में वे बच्चे जो कि अनचाहे होते हैं या प्यार नहीं पा पाते) यह सांवेगिक स्थिति वृद्धि हार्मोन के सामान्य स्त्रावण में रुकावट पैदा करती है।

**लिट गार्डनर (1972)** – शिशु के विकास की चरम अवस्था में प्यार की कमी एवं नकारात्मक व्यवहार शिशु के शारीरिक विकास को प्रभावित कर सकता है। गार्डनर निष्कर्ष रूप में यह कहता है कि पृथक्कृत बौनापन एक प्रत्यक्ष प्रभाव है अथवा प्रकृति का प्रयोग है जो अभिभावक शिशु संबंधों की नाजुकता जटिलता व महत्ता को प्रदर्शित करता है।

**कुहन बुतलर एवं शैन वर्ग (1978)** – वह निश्चित प्रक्रिया जिसके कारण पृथक्करण, बौनापन देखा जाता है वह अभी अज्ञात है। जबकि ऐसा प्रतीत होता है कि सांवेगिक तनाव के कारण प्ट्यूटरी व वृद्धि हार्मोन के उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है; प्रायः वृद्धि हार्मोनों का स्त्राव निद्रा की अवस्था में होता है और जो बच्चे तनाव ग्रस्त व पृथक्कृत वातावरण में रहते हैं वे तनाव के कारण पर्याप्त नींद नहीं ले पाते अतः उनकी वृद्धि प्रभावित होती है। शिशु चूहों पर किये गये अध्ययन स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं कि माता से पृथक्करण करने पर उनमें वृद्धि हार्मोन का स्त्राव तत्काल प्रभाव से संदर्भित हो जाता है जो उन्हें पुनः माता के साथ रखने पर बढ़ जाते हैं।

**बी. पी. वर्मा लता राजू एवं नायक (1992)** – पृथक्करण के अनुभव के संबंधों में किशोर विद्यार्थियों में विराग के अध्ययन की दृष्टि से यह खोज की गयी एवं परिणाम स्वरूप ज्ञात हुआ कि किशोर विद्यार्थियों में एकाकीपन, शक्ति का नहीं होना एवं सम्पूर्ण विराग पर उनके पृथक्करण के अनुभव का प्रभाव पड़ता है।

**आर. ए. सिंह एवं अन्य (1995)** – इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य का दीर्घकालीन पृथक्करण एवं लिंग के साथ शैक्षिक संस्थाओं के सामाजिक एवं सांवेगिक वातावरण के संबंधों का अध्ययन करना। उत्तरी बिहार के छपरा कस्बे के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 10 के 220 लड़कों एवं लड़कियों को न्यादर्श में चयनित किया गया एवं सामाजिक सांवेगिक वातावरण मापनी और दीर्घ वातावरण एवं दीर्घकालीन पृथक्करण का मापन किया गया। परिणामस्वरूप यह पता चलता है कि दीर्घकालीन पृथक्करण बहुत घनिष्ट रूप से विद्यालयों के सामाजिक एवं सांवेगिक वातावरण के सम्बन्धित होता है। लिंग के अनुसार सामाजिक सांवेगिक वातावरण के प्रत्यक्षीकृत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। दोनों लिंग के किशोर विद्यालयी वातावरण से समान रूप से प्रभावित होते हैं।

### अध्ययन की आवश्यकता

अनेक मनोवैज्ञानिक इस तथ्य के पक्षधर हैं कि एक स्वस्थ व पोषक समाज में स्वस्थ व संतुलित व्यक्तित्व के विकास का सार निहित है। किन्तु यदि समाज की व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने व उसे विकासोचित अनुकूल वातावरण में असमर्थ रहे, तो व्यक्ति के जीवन में अनेक आशंकाओं, दुश्चिन्ताओं एवं तनावों को प्रादुर्भाव होता है।

संभवतः यही कारण है कि वर्तमान समाज में बढ़ती अनिश्चितता ने व्यक्ति में निराशा व असुरक्षा का संचार किया है। साथ ही आजकल के समाज में विघटन की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। पहले जहाँ परिवार एक संयुक्त ईकाई होता है। अब उसका प्रारूप भी सिमटता जा रहा है। नाते-दारी व सामाजिक संबंधों की परिधि संकीर्ण होती जा रही है। इसकी वजह से व्यक्ति की कुछ मानसिक आवश्यकताएँ जैसे स्थिरता, विश्वसनीयता एवं सम्बन्ध आदि अति सीमित सामाजिक अंतःसंबंधों के कारण संतुष्ट नहीं हो पाती। परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं को असहाय व अलग महसूस करता है उसे लगता है कि समाज से उनके बंधन टूट गये हैं व वह पृथक् हो गया है।

### अध्ययन उद्देश्य

- किशोर छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।
- किशोर छात्राओं में पृथक्करण की भावना का अध्ययन करना।

### अनुसंधान विधि

वर्तमान शोधकार्य “किशोर छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का अध्ययन” हेतु एक उपकल्पना है जो कि परीक्षण के दौरान या परीक्षणोपरान्त यह सत्य भी साबित हो सकती है और मिथ्या या व्यर्थ भी सैम्पलिंग

के लिए लोकल एरिया लेते हुए 100 किशोर-किशोरियों को रेडमली लिया जाएगा जिसमें सुरक्षात्मक व असुरक्षात्मक मापनी (एस.आई.एस.) डॉ. बीना शाह की मापनी का अनुप्रयोग किया जाएगा।

प्रतिदर्श का आकार



कुल छात्राएँ



100

### उपसंहार

उपर्युक्त विवेचनों के आधार पर संभवतः कई अन्य कारक व्यक्ति में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना हेतु अलग-अलग उत्तरदायी हैं। जैसे – किशोरावस्था में आत्म प्रत्यय व्यवहार का महत्वपूर्ण निर्धारक व व्यक्तित्व का मापक है। जिन किशोरों का आत्मप्रत्यय सुदृढ़ नहीं होता उन लोगों में असुरक्षा की भावना देखी जाती है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक वातावरण व पारिवारिक संबंधों में असंतुलन भी व्यक्ति की सुरक्षा की भावना को क्षति पहुँचाते हैं।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chouhan S. S. (1983), Psychology of Adolescence Page No.-1-8, 204-224
2. Bhatt Dr. Mohpama (2007), Human Development A life Span Perspective, Page No. 388-419
3. Arthcor, T. Sersild (1957-1963), The Psychology of Adolescence (Second Edition) Page No. 124-125
4. Charles G. Morris - Psychology (Third Edition) Prentice Hall in a Emglewood cliffes New Journey, 359, 237-38
5. D. L. Sheparo, Psychology the science of human behavior, science research associates INC chicago palo Alto Toranto Henley on thomes sydney paris 460-69
6. डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव, डॉ. प्रीति वर्मा, बाल मनोविज्ञान, बाल विकास (2007), पृ.सं.-371

